UG SEM : 3 SANSKRIT HONS.

TOPIC :

By : DR. KAVITA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR
DEPT. OF SANSKRIT
G.S.M.M., GARHWA

Scanned with CamScanner

प्रश्न :- दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण करें।

उत्तर :- दुष्यन्त अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक है। भारतीय रीति के वह धीरोदात्त नायक है। ऐसा नायक आदर्श माना जाता है। उसका व्यक्तित्व और आन्तरिक गुण दोनों आकर्षक है। प्रियंवदा दुष्यन्त की गंभीर आकृति तथा मधुर बातों की प्रशंसा करती है। राजा दुष्यन्त का आकार-प्रकार भी बहुत आकर्षक है। वह बलवान तथा गठीले शरीर का धनी है। उसके विषय में इस नाटक के कई स्थलों पर कुछ विशेषण लगाये गये है। जैसे -

"अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम्"

अर्थात् निरन्तर धनुष की डोरी के घर्षण से उसका अगला भाग कठोर है। इसी प्रकार एक स्थान पर उसकी भुजाओं को नगर की रक्षक दीवार के समान कहा गया है।-

"नगरपरिघ प्रांशुबाहुः"

राजा दुष्यन्त वीर है। उसकी वीरता का उपयोग अच्छे कार्यों में होता है। वह अपनी शारीरिक शक्ति से तपोवन की रक्षा करता है तो इन्द्र के शत्रु राक्षसों का भी दमन करता है। वह कहीं भी अन्याय के विरुद्ध तुरत कार्य करता है। जैसे प्रथम अंक में जब शकुन्तला भ्रमर बाधा से पीड़ित होती है तब सखियों के तनिक संकेत करने पर ही दुष्यन्त प्रकट हो जाता है, और कहता है कि पुरु वंशी राजा के शासन करने पर तपस्वी कन्याओं के प्रति कौन दुष्ट अविनय कर रहा है। इसी प्रकार षष्ठ अंक में जब इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक पर आक्रमण करता है, तब दुष्यन्त तुरंत धनुष-बाण लेकर उसकी रक्षा के लिए उद्यत हो जाता है।

राजा दुष्यन्त अत्यंत विनीत और मधुर-भाषी है। तपोवन में वह कहता है कि आपके दर्शन से ही मेरा सत्कार हो गया —

" भवतीनां सूनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम् "

आश्रमवासी मुनियों के प्रति ही नहीं अपितु मातलि के द्वारा प्रशंसा किये जाने पर भी वह इन्द्र का ही गुणगान करता है, अपने विषय में कुछ नहीं कहता है।

दुष्यन्त धर्म परायण है। राजा के रूप में वर्णाश्रम-धर्म की रक्षा को वह अपना कर्तव्य समझता है। यद्यपि वह आखेट प्रेमी है तथापि इस विषय में भी धर्म से संचालित होता है। जब मुनि लोग कहते हैं कि यह आश्रम का हिरण है इसे मत मारिये, तब वह मुनियों का आग्रह स्वीकार कर लेते हैं। महर्षि कण्व के आश्रम में तथा मारीच के आश्रम में अत्यंत विनीत वेष में जाता है। इससे आश्रमों के प्रति उसकी पूज्य भावना प्रकट होती है। वह धार्मिक मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं करता। सुन्दरी शकुन्तला को देखकर वह आतुर होता है। किन्तु उसके प्रति प्रेम दिखाने के पहले वह जान लेना चाहता है कि उससे विवाह के योग्य राजा स्वयं है या नहीं। अपने अन्तःकरण की आर्य प्रवृत्ति पर पूर्ण विश्वास है।

दुष्यन्त में आदर्श राजा का रूप मिलता है। पंचम अंक में शकुन्तला का तिरस्कार करने पर कण्व का शिष्य उस पर कठोर वचनों का प्रहार करता है। किन्तु दुष्यन्त सभी बातों को सहकर कठोर आत्मसंयम का परिचय देता है। वह अपनी प्रजा में जहाँ कहीं अव्यवस्था देखता है, किसी को कष्ट देखता है, तो अपने को प्रजा के बंधु के रूप में उपस्थित करता है। इससे दुष्यन्त की कर्तव्य परायणता ज्ञात होती है। वह उच्च कोटि का शासक है।

प्रजा की रक्षा करना प्रथम कार्य है। प्रथम अंक के अंत में ऋषियों का आग्रह सुनते ही राक्षस भगाने के लिए लेकर वह तुरन्त रक्षा के लिए दौड़ जाता है। शकुन्तला के प्रति प्रेम होने पर भी वह राज्य के कार्य का उचित निरीक्षण करता है यह उसका आदर्श रूप है।

राजा दुष्यन्त ललित कलाओं का भी मर्मज्ञ है। वहाँ पर कोकिला का स्वर सुनकर वह कहता है —

अहो राग परिवाहिनी गीतिः।

वह चित्रकला में भी निपुण है। षष्ठ अंक में शकुन्तला के वियोग में व्याकुल हो प्रमदवन में शकुन्तला का चित्र बनाता है और उसका वर्णन भी करता है। विदूषक और उसकी सानुमती भी उसकी चित्रकला की प्रशंसा करती हैं।

वह धीरोदात्त नायक होने के कारण उदार पति और उत्साही प्रेमी है। अनेक पत्नियों के होने पर भी उसके नैतिकता का भाव बना रहता है। इसी प्रीति वह अपने कर्तव्य से च्युत नहीं होता। उसकी सुख सुविधा का वह ध्यान रखता है। शकुन्तला से उसका प्रेम है, किन्तु रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला के चित्र को छिपा लेता है।

कवि कालिदास ने दुष्यन्त के चरित्र को ऊँचा उठाने के लिए दुर्वासा के शाप की कल्पना की है। दुष्यन्त शकुन्तला को जान-बूझकर नहीं भूलता है। वह शाप के अधीन है। इसलिए उसे स्मरण नहीं आता कि उसने कभी उससे प्रेम किया था। बाद में अंगूठी मिल जाने पर वही दुष्यन्त दुःख की ज्वाला में जलने लगता है। दुष्यन्त का प्रेमी रूप कई स्थलों पर प्रकट हुआ है नाटक के प्रारंभ में वह वासनात्मक प्रेम से ही बढ़ता है किन्तु विरह के बाद उसका प्रेम आध्यात्मिक परिधि में प्रवेश करता है। प्रारंभ में वह छिपकर तापस कन्याओं का रूप दर्शन करता है, उनका वार्तालाप सुनता है। शकुन्तला सखियों के साथ कुछ परिचय होती है बात भी प्रजा के बारे [illegible]

टाल जाता है और अपने स्थान पर विदूषक को राजधानी भेज देता है। ये सब दुष्यन्त की दुर्बलताएँ हैं, किन्तु रस-निष्पत्ति के लिए इनका योगदान बहुमूल्य है।

इसी प्रकार वह शकुन्तला से अपने प्रेम के विषय में विदूषक से सबकुछ कह कर अन्त में कह देता है कि ये बातें गंभीरतापूर्वक मत लेना। यह सबकुछ "परिहास विजल्पित" है। इसे किसी से कहने की आवश्यकता नहीं है। इस घटना का भी नाटक में योगदान है। क्योंकि ये सब यदि विदूषक को दृष्टि में लक्ष्य होते तो पंचम अंक का दृश्य ही दूसरा होता, यहीं नाटक का अंत हो जाता। किन्तु कालिदास की बड़ी कुशलता से दुष्यन्त की इस दुर्बलता को नाटक के घटना क्रम के विकास में आवश्यक समझा है।

कुल मिलाकर अभिज्ञानशाकुन्तल में जो दुष्यन्त का चरित्र प्रस्तुत किया गया है। वह सर्वथा नाटकोचित आकर्षक और प्राचीन नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से धीरोदात्त नायक का चरित्र है। वह कालिदास की अमर सृष्टि है जो मनुष्य और देवता के बीच मध्यस्थ का भी काम करता है। उसकी वीरता न उद्घोष पृथ्वी पर ही नहीं अपितु स्वर्ग में भी होता है।

=x=